कानपुर में बनने लगा 80 किलो ऑक्सीजन से लैस पैराशूट

■ सुहेल खान

30 हजार फीट से कराता है सटीक लोकेशन पर लैंडिंग

■ **ऑक्सीजन सप्लाई और टारगेटेड लैंडिंग में सहायक**

आंकड़ों पर एक नजर

- ■ एमसीपीएस का पेलोड : 200 किलो
- ■ खुलने का समय : 3 से 4 सेकेंड
- ■ पैराशूट सिस्टम की आयु : 10 वर्ष या 500 जंप

अमेरिका पर निर्भरता नहीं रहेगी

एमसीपीएस का उत्पादन आत्मनिर्भर भारत मिशन के तहत बहुत बड़ी सफलता है। भारत में यह सिस्टम नहीं था और अमेरिका पर निर्भरता थी। अमेरिका से आरए-1 पैराशूट सिस्टम (मिलिट्री फ्री-फॉल एडवांस्ड रैम-एयर पैराशूट सिस्टम) आयात किया जाता है। आरए-1 और एमसीपीएस दोनों ही पैराशूट सिस्टम में काफी समानताएं हैं। मसलन दोनों सिस्टम 30 हजार फीट या उससे ऊपर के जंप के लिए डिजाइन किए गए हैं जो कि हाई एल्टीट्यूट हाई ओपनिंग और हाई एल्टीट्यूट लो ओपनिंग जैसे मिशनों के लिए जरूरी है। दोनों की ग्लाइड परफॉर्मेंस में रैम-एयर डिजाइन है, जो ग्लाइड रेशियो (4:1) और सटीक लैंडिंग की सुविधा देता है। दोनों पैराशूट स्पेशल फोर्सेज के लिए बने हैं जो गुप्त और टेक्टिकल मिशनों (जैसे दुश्मन क्षेत्र में घुसपैठ) के लिए उपयुक्त है।

"दुर्गम क्षेत्रों में आसानी से उतरने को एमसीपीएस पैराट्रूपर्स के लिए अहम साबित होगा। आधुनिक पैराशूट सिस्टम के प्रोटोटाइप बनाने का काम शुरू हो गया है। -**एमसी बालासुब्रमणियम**, सीएमडी, जीआईएल, कानपुर

कानपुर। ऑर्डिनेंस पैराशूट फैक्ट्री (ओपीएफ) ने 80 किलो ऑक्सीजन सिलेंडर से लैस पैराशूट सिस्टम बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।
डीआरडीओ की आगरा स्थित प्रयोगशाला एडीआरडीई के लिए प्रोटोटाइप बनाया जा रहा है। 30 हजार फीट की ऊंचाई से मिलिट्री कॉम्बैट पैराशूट सिस्टम (एमसीपीएस) से लैस पैराट्रूपर्स आसानी से अपनी सटीक लोकेशन पर लैंड कर सकेंगे। इस ऊंचाई पर ऑक्सीजन लगभग न के बराबर होती है और एमसीपीएस से पैराट्रूपर्स 45 मिनट से एक घंटे तक आसानी से सांस ले सकेंगे। 10 से 14 फरवरी तक बेंगलुरु में चले एयरो इंडिया में एडीआरडीई के कानपुर स्थित ग्लाइडर्स इंडिया लिमिटेड को तकनीकी ट्रांसफर करने के बाद ओपीएफ ने इस पैराशूट सिस्टम का प्रोटोटाइप बनाना शुरू कर दिया है। अगले तीन से चार महीने में इसे बनाया जाएगा।

अधिक ऊंचाई से सटीक लोकेशन पर उतरने की क्षमता : 30 हजार फीट की ऊंचाई से जमीन या पहाड़ियों पर पैराट्रूपर्स का सटीक लोकेशन पर सुरक्षित लैंडिंग कराना एमसीपीएस की खासियत है। 200 किलो भार क्षमता लेकर 280 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से उतरने में सक्षम इस पैराशूट की आयु 10 साल तक है। इसे अधिकतम 500 बार इस्तेमाल किया जा सकता है। इस पैराशूट सिस्टम में पैराट्रूपर्स को खास डिजाइन किया सूट पहनते हैं। सूट को जीपीएस से लैस किया गया है। दिशा बताने के लिए मैग्नेटिक कंपास, पैरा कंप्यूटर, इंटरपर्सनल रेडियो पैराट्रूपर्स को निर्दिष्ट लैंडिंग जोन तक सटीकता के साथ पहुंचाने में सक्षम बनाता है। इसके अलावा पैराट्रूपर्स बुलेटप्रूफ जैकेट भी पहनकर लैंडिंग कर सकता है। एएन-32, आईएल-76, सी-17, सी-130 जैसे एयरक्राफ्ट से पैराट्रूपर्स इस सिस्टम की मदद से कूद सकते हैं।